समास

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर

शेषांश :—

1) अव्ययीभाव समास —

* जिस समास में पूर्वपद प्रधान हो तथा समस्त पद अव्यय की तरह प्रयुक्त हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। जैसे-

प्रतिदिन - प्रत्येक दिन।
यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार।
यथाविधि - विधि के अनुसार।
आमरण - मरण तक।

यहाँ चारों ही पदों में क्रमशः 'प्रति', 'यथा' एवं 'आ' पद ही प्रधान हैं क्योंकि इन पदों से निकलनेवाले अर्थों में क्रमशः 'प्रत्येक', 'अनुसार' एवं 'तक' अर्थ प्रधान है। जैसे- वह प्रतिदिन यहाँ आता है; इस

वाक्य का तात्पर्य यह नहीं है कि वह रात में न आकर दिन में आता है, बल्कि इसका तात्पर्य यह है कि वह 'प्रत्येक' दिन आता है। इस तरह प्रस्तुत उदाहरण में 'प्रत्येक' अर्थ बतलानेवाला पहला पद ही प्रधान है। इसी प्रकार दूसरे उदाहरण यथाशक्ति का प्रयोगानुकूल अर्थ भी ध्यान देने योग्य है। वह यथाशक्ति दान करता है; इस वाक्य का तात्पर्य यह है कि वह अपनी शक्ति अर्थात् सामर्थ्य के अनुसार ही दान करता है न कि अपनी सामर्थ्य की समाप्ति पर्यन्त अर्थात् उसकी चरम सीमा तक दान करता है। इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरण में भी 'अनुसार' अर्थ बतलानेवाला पहला पद 'यथा' ही प्रधान है।

'आमरण' एवं 'आजीवन' जैसे समस्त पदों के संबंध में यह प्रश्न उठता है कि 'आ' जैसे उपसर्ग स्वतंत्र अवस्था में किसी पूर्ण अर्थ के वाचक नहीं

हैं, फिर ये पद कैसे कहला सकते हैं? वस्तुतः यहाँ यह समझना चाहिए कि एक निश्चित अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए ये पद प्रयुक्त हो रहे हैं, इस अवस्था में ये पद हैं। इसी प्रकार के उपसर्ग नञ् तत्पुरुष में (अ, अन्) एवं प्रादि तत्पुरुष में (प्र, सु आदि) भी प्रथम पद के रूप में पद माने गये हैं।

कभी-कभी संज्ञा शब्दों की द्विरुक्ति में भी अव्ययीभाव समास होता है। जैसे-

घर-घर – प्रत्येक घर।

गाँव-गाँव – प्रत्येक गाँव।

कदम-कदम – प्रत्येक कदम।

— क्रमशः